नवभारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों पर बढ़ते हमले चिंताजनक

बांग्लादेश से हाल ही में सामने आई दर्दनाक घटनाएं केवल किसी एक समुदाय के खिलाफ हिंसा भर नहीं हैं, बल्कि यह उस मानवीय विवेक पर हमला है, जो किसी भी लोकतांत्रिक समाज की बुनियाद होता है. एक हिंदू व्यापारी पर पेट्रोल छिड़ककर उन्हें जिंदा जलाने की कोशिश ने न केवल एक परिवार को बर्बाद किया, बल्कि पूरे अल्पसंख्यक समाज में भय, असुरक्षा और अविश्वास का माहौल पैदा कर दिया है. यह घटना कोई अपवाद नहीं, बल्कि पिछले कुछ महीनों से जारी हिंसा की उसी श्रृंखला का हिस्सा है, जो चुनावी मौसम के साथ और अधिक खतरनाक रूप लेती दिख रही है.

रिपोर्टों के अनुसार, पिछले वर्ष नवंबर-दिसंबर के बीच अल्पसंख्यकों के खिलाफ कम से कम 76 हिंसक घटनाएं दर्ज की गई. इसी अवधि में चार बड़ी वारदातों ने सुरक्षा तंत्र पर गंभीर प्रश्न खड़े कर दिए हैं. यह तथ्य किसी आकस्मिक उन्माद की ओर नहीं, बल्कि एक सुनियोजित पैटर्न की ओर इशारा करता है, जिसमें राजनीतिक अस्थिरता के दौर में अल्पसंख्यकों को 'सॉफ्ट टारगेट' बनाना एक आसान रणनीति बन चुका है. इतिहास गवाह है कि बांग्लादेश में हर बार चुनावी सरगर्मी बढ़ते ही सांप्रदायिक तनाव की आंच तेज होती है. उपद्रवी तत्व भीड़ मानसिकता भड़काकर न केवल सामाजिक सौहार्द को नुकसान पहुँचाते हैं, बल्कि लोकतांत्रिक ढांचे को भीतर से खोखला कर देते हैं. यह स्थिति इसलिए और अधिक चिंताजनक हो जाती है, क्योंकि बांग्लादेश ने अपनी स्वतंत्रता मानवाधिकार और सामाजिक न्याय की लड़ाई के आधार पर हासिल की थी. आज वही देश यदि अपने ही नागरिकों को सुरक्षा का भरोसा नहीं दे पाता, तो यह उसके लोकतांत्रिक चरित्र के लिए गंभीर चुनौती है.अल्पसंख्यकों के खिलाफ हिंसा किसी राष्ट्र के भीतर बढ़ती असहिष्णुता का संकेत होती है. जब किसी समुदाय को यह महसूस होने लगे कि वह कानून और शासन की संरक्षा से बाहर है, तब उसका विश्वास न केवल प्रशासन से, बल्कि पूरे लोकतांत्रिक तंत्र से डगमगाने लगता है.

यह परिस्थिति न केवल सामाजिक विघटन को जन्म देती है, बल्कि राष्ट्र की अंतरराष्ट्रीय विश्वसनीयता को भी नुकसान पहुंचाती है. ऐसे में प्रश्न यह है कि क्या फरवरी में होने वाले चुनाव हिंसा के एक और दौर का संकेत बनेंगे, या फिर बांग्लादेश की सत्ता और संस्थाएं इस चुनौती को गंभीरता से लेकर कड़ा संदेश देंगी. ज़रूरत केवल बयानबाजी की नहीं, बल्कि ठोस कार्रवाई की है. दोषियों को त्वरित और कड़ी सजा मिले, ताकि कानून का भय कायम रहे. संवेदनशील क्षेत्रों में सुरक्षा तंत्र मजबूत हो तथा चुनावी प्रक्रिया को निष्पक्ष और शांतिपूर्ण बनाने के लिए अतिरिक्त व्यवस्था की जाए. नागरिक समाज और मानवाधिकार संगठनों को भी इस पूरी प्रक्रिया पर सतर्क निगरानी रखनी चाहिए, क्योंकि अल्पसंख्यकों की सुरक्षा केवल किसी एक समुदाय का मुद्दा नहीं, यह पूरे समाज के नैतिक चरित्र से जुड़ा प्रश्न है. बांग्लादेश अपने इतिहास, संस्कृति और संघर्ष की स्मृति के साथ हमेशा एक आशावान राष्ट्र के रूप में देखा गया है. परंतु आज वहां अल्पसंख्यक बस्तियों में फैला डर, जलते घरों की चीख और असुरक्षा की छाया कुछ और कहानी कहती है. यदि समय रहते इस हिंसा के दुष्चक्र को नहीं रोका गया, तो इसका असर केवल बांग्लादेश तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि यह पूरे दक्षिण एशिया की सामाजिक स्थिरता, क्षेत्रीय शांति और लोकतांत्रिक मूल्यों के लिए गहरी चुनौती बन सकता है.

कुल मिलाकर एक राष्ट्र की मजबूती इस बात से तय होती है कि वह अपने दुर्बल और अल्पसंख्यक नागरिकों को कितनी सुरक्षा और सम्मान दे पाता है. बांग्लादेश के सामने यही कसौटी आज पहले से कहीं अधिक कठोर रूप में खड़ी है.

रैंकिंग में चमक और नलों में दूषित पानी

श्याम यादव

शहर स्वच्छता में अव्वल है, इसलिए पानी गंदा कैसे हो सकता है? अगर गंदा है भी तो तकनीकी रूप से. तकनीकी शब्द सुनते ही आम आदमी समझ जाता है कि अब दोष किसी व्यक्ति या संस्था का नहीं, बल्कि किसी अमूर्त प्रक्रिया का है. और प्रक्रिया की सबसे सुरक्षित विशेषता यह होती है कि उसे कभी निलंबित नहीं किया जाता, न उस पर कोई कार्रवाई होती है.

> आखिरकार, स्वच्छता का अर्थ सिर्फ साफ दिखाई देना नहीं है. इसका मतलब है सुरक्षित पानी, भरोसेमंद व्यवस्था और स्पष्ट जवाबदेही. अगर नलों से ज़हर बहने के बाद भी हम इसे तकनीकी शब्दों में ढकते रहेंगे, तो सवाल सिर्फ पानी का नहीं रहेगा. सवाल यह होगा कि क्या इस विकास मॉडल में नागरिक की जान की कोई वास्तविक कीमत है भी या नहीं.

इंदौर में दूषित पानी से हुई मौतें महज एक स्थानीय हादसा नहीं हैं. यह उस शहरी विकास मॉडल की परिणति हैं, जिसमें उपलब्धियों का मूल्यांकन रैंकिंग, पुरस्कार और प्रचार अभियानों से तय होता है, न कि नागरिक के रोजमर्रा के अनुभव से. शहर कितना स्मार्ट है, यह कैमरे और आंकड़े बताते हैं; लेकिन नल खोलते ही जो डर और अनिश्चितता बहती है, उसका कोई सूचकांक नहीं बनता.

प्रशासनिक प्रतिक्रिया का ढांचा अब लगभग स्वचालित हो चुका है. घटना होते ही कहा जाता है—नमूने लिए गए हैं, जांच जारी है, रिपोर्ट आने पर स्थिति स्पष्ट होगी. यह प्रक्रिया आश्वासन ज्यादा देती है, समाधान कम. सवाल यह नहीं रह जाता कि पानी कैसे दूषित हुआ, बल्कि यह बन जाता है कि मामला कितने दिन में शांत हो जाएगा. रिपोर्ट के आने तक समय खरीदा जाता है, और समय के साथ सवालों की धार कुंद पड़ जाती है.

पेयजल जैसी बुनियादी सुविधा अगर नागरिक के लिए जोखिम बन जाए, तो यह किसी एक विभाग की विफलता नहीं, पूरे शासन तंत्र की प्राथमिकताओं पर सवाल है. पानी कोई वैकल्पिक सेवा नहीं है कि खराब होने पर उसे कुछ समय के लिए बंद कर दिया जाए. यह जीवन से जुड़ा विषय है. इसके बावजूद व्यवस्था का भरोसा टैंकरों, अस्थायी इंतजामों और सलाहों पर टिका दिखता है- पानी उबालकर पीजिए, बाहर से मंगाइए, सावधानी बरतिए. मानो सुरक्षित पानी उपलब्ध कराना नहीं, बल्कि सावधान रहना नागरिक की जिम्मेदारी हो.

स्वच्छता रैंकिंग ने नगर निकायों को एक खास किस्म की मानसिकता में ढाल दिया है. सड़कें चमकें, दीवारें रंगी हों, कचरे के ढेर कैमरे से दूर रहें—यही स्वच्छता का दृश्य रूप है. लेकिन भूमिगत पाइपलाइन, सीवेज नेटवर्क और जलशोधन संयंत्रों की स्थिति पर शायद ही उतना ध्यान दिया जाता है. ये वे हिस्से हैं जो दिखते नहीं, तस्वीरों में नहीं आते और पुरस्कार समारोह में तालियां नहीं दिलाते. नतीजा यह कि शहर ऊपर से साफ दिखता है और नीचे से धीरे-धीरे सड़ता रहता है.

इंदौर की घटना यह भी बताती है कि शहरी बुनियादी ढांचे में रखरखाव को लगातार टालने की कीमत आखिरकार नागरिक चुकाता है. पाइपलाइनें पुरानी हैं, कई जगह पीने के पानी और सीवेज की लाइनें साथ-साथ चल रही हैं, निगरानी व्यवस्था ढीली है. ये सब बातें नई नहीं हैं. फर्क सिर्फ इतना है कि जब तक नुकसान आंकड़ों में तब्दील नहीं होता, तब तक इसे तकनीकी समस्या मानकर टाल दिया जाता है. सबसे गंभीर सवाल जवाबदेही का है. मौतें होती हैं, बयान आते हैं, कभी-कभार मुआवज़े की घोषणा होती है और फिर व्यवस्था आगे बढ़ जाती है. शायद ही कभी यह तय होता है कि लापरवाही कहां हुई और उसकी जिम्मेदारी किसकी है. जब दोष तय नहीं होता, तो सुधार भी अधूरा रह जाता है. जांच समितियां बनती हैं, रिपोर्टें आती हैं और फिर अगली घटना तक सब कुछ जस का तस बना रहता है.

यह भी गौर करने वाली बात है कि ऐसी घटनाओं के बाद सार्वजनिक विमर्श अक्सर भावनात्मक राहत तक सीमित रह जाता है. कुछ दिन गुस्सा, कुछ दिन दुख, फिर सामान्य स्थिति. लेकिन नीतिगत स्तर पर यह स्वीकार करने का साहस कम ही दिखता है कि मौजूदा प्राथमिकताएं गलत दिशा में हैं. विकास अगर नागरिक की बुनियादी सुरक्षा सुनिश्चित नहीं कर पा रहा, तो उसकी चमक पर सवाल उठना ही चाहिए.

इंदौर की यह त्रासदी सिर्फ इस शहर की कहानी नहीं है. देश के कई शहर इसी रास्ते पर हैं- रैंकिंग में ऊपर, लेकिन बुनियादी सेवाओं में असुरक्षित. स्वच्छता, स्मार्ट सिटी और अमृत जैसी योजनाओं का असली मूल्यांकन तब होगा, जब नागरिक नल का पानी बिना डर के पी सके.

मध्य क्षेत्र की डायरी

सरकारी जमीन पर अतिक्रमण

दिलीप झा

मध्य प्रदेश के सभी जिलों में सरकारी जमीन पर भारी अतिक्रमण है और यहीं से पूरे प्रदेश में आपराधिक गतिविधियों का संचालन होता है. हालांकि ये अतिक्रमण हाल-फिलहाल में नहीं हुए हैं. वर्षों से प्रदेश में यह खेल चल रहा है लेकिन प्रशासन अमला अतिक्रमण हटाने को लेकर जब एक्शन में आता है तो उसे वोट की राजनीति करने वाले नेताओं की तरफ से फरमान सुना दिया जाता है कि तुम्हारा क्या जाता है. अधिकारियों को कार्रवाई करने से रोका जाता है. ऐसे में वे कैसे काम करेंगे और उनसे ईमानदारी की अपेक्षा भी नहीं संभव नहीं है.

राजधानी भोपाल समेत सभी संभागों में जबरदस्त अतिक्रमण है और इसके लिए कांग्रेस और बीजेपी के माननीय जिम्मेदार है. अतिक्रमण पर गृह निर्माण और फिर बिजली पानी की सुविधाएं मुहैया कराई जाती है और तैयार हो जाता है वोट बैंक. सरकार के नाक के सामने अर्थात मंत्रालय आजू बाजू में भारी अतिक्रमण है. अन्ना नगर को अतिक्रमण नगर कह सकते हैं. भेल की जमीन पर भारी अतिक्रमण और कोलार रोड पर अवैध बसावट इस बात की पुख्ता गवाही है कि सबकुछ कांग्रेस और बीजेपी की मिलीभगत से हो रहा है और उनका शहर के विकास और भोपाल में निवेश से कोई लेना देना नहीं है. बस उनका अपना सिस्टम चलना चाहिए. इस बात से कोई इंकार नहीं कर सकता कि प्रदेश के कई शहरों में अतिक्रमण की वजह से शहरों की आबोहवा बिगड़ रही है क्योंकि यहां से सामाजिक सौहार्द बिगाड़ने का षडयंत्र खेला जाता है. सरकार के खिलाफ दवाब बनाने के लिए प्रदर्शन करने वालों को तैयार किया जाता है. देश के सभी राज्यों में सरकारी जमीनों पर अतिक्रमण के खिलाफ जबरदस्त अभियान चल रहा है तो मध्यप्रदेश में क्यों नहीं कार्रवाई चल रही है, यह बड़ा सवाल है. लोग कहते हैं कि आखिर सरकार की क्या मजबूरी है कि वह अपनी जमीन पर कब्जा करने से हिचकते रहती है. जमीन पर कब्जा, सड़क पर वाहनों का कब्जा, वन भूमि पर कब्जा, रेलवे और भेल की जमीन पर कब्जा के कारण गुंडा मवालियों के हौसले बुलंद हैं. वे राजधानी समेत पूरे प्रदेश में गुंडाराज स्थापित करना चाहते हैं. लोग बताते हैं कि ऐसे में मध्यप्रदेश में कमजोर सरकार का मैसेज देश में जाता है और जनता में बीजेपी के प्रति भरोसा भी कम होने लगता है.

हालांकि नगर निगम का अमला यदा कदा अतिक्रमण हटाने का प्रयास करता है लेकिन वह भी छोटे छोटे कार्रवाई तक सीमित रहता है और उन्हें भी राजनीतिक हलकों से रोका जाता है. भोपाल में सरकारी जमीन पर ईरानी डेरे का कब्जा है. यहां 250 से ज्यादा मकान अतिक्रमण करके बनाए गए हैं लेकिन अभी तक यहां से अतिक्रमण हटाने को लेकर कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई है. हल्की कार्रवाई महज खानापूर्ति के रूप में कई बार सामने आई है लेकिन पूरी तरह से अतिक्रमण मुक्त कराने का अभी तक एक्शन देखने को नहीं मिला है. यहां तकरीबन एक हजार की आबादी है और बताया जा रहा है कि दूसरे राज्यों में लूट और ठगी करने वाले अपराधियों की यह शरण स्थली के रूप में कुख्यात है. इस बात से कोई इंकार नहीं कर सकता कि यहां से आपराधिक गतिविधियों को अंजाम दिया जाता है लेकिन इसके बावजूद अगर बड़ी कार्रवाई नहीं होती है. रेलवे और शासन की जमीन पर अवैध कब्जा करने वालों का हौसला इतना बुलंद हैं कि यहां पुलिस को फटकने नहीं देते. हालांकि भोपाल के पुलिस कमिश्नर हरिनारायणचारी मिश्र का कहना है कि अतिक्रमण हटाने पूरी तैयारी चल रही है. ईरानी डेरे से जुड़े अपराधियों की संपत्तियों की जानकारी जुटाई जा रही है. अवैध निर्माणों पर बुलडोजर चलाने और लूट का सोना खरीदने वाले ज्वेलर्स की पहचान कर कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी.

नगर निगम भोपाल भी ले सबक

8 बार स्वच्छता का अवार्ड जीत इंदौर में दूषित पानी पीने से 15 लोग काल के गाल में समा गए. इस घटना के बाद पूरे प्रदेश में नगर निगम की कार्यशैली पर सवाल खड़े हो गए हैं. भोपाल के कई वार्डों में भी दूषित पानी की शिकायतें मिल रही है लेकिन उन शिकायतों का समाधान त्वरित गति से नहीं हो रहा है. नगर निगम का वर्तमान रवैया सकारात्मक नहीं है. उसके कर्मचारी भी मठाधीश की तरह काम करने के वर्षों से आदि हैं. और यह केवल भोपाल अथवा मध्यप्रदेश की बात नहीं है, बल्कि पूरे देश के नगर निगम का यही हाल है. वे अपनी अफसरशाही और कार्यशैली को सुधारने को लेकर रत्तीभर गंभीर नहीं है. दरअसल वर्षों से नगर निगम, नगर पालिका और नगर परिषद भ्रष्टाचार का अड्डा बना हुआ है. वाटर सप्लाई के हाल के बारे में तीन साल पहले 400 घरों में सर्वे किया गया था और इसमें कहा गया था कि सीवेज और पानी की लाइनें एक चैनल से गुजर रही है. सबसे स्वच्छ शहर इंदौर में 59 जगहों पर पानी पीने योग्य नहीं है तो भोपाल नगर निगम को भी पानी के सैंपल लेकर बताना चाहिए कि कितने जगहों की पानी पीने योग्य नहीं है. खासकर पुराने शहर और झुग्गी झोपड़ी इलाकों में इंदौर जैसी घटना न हो, इसके लिए सरकार को गंभीरता से काम करना चाहिए.

रूठे कार्यकर्ता को मनाने लगा नेता

नेता : हम जानते हैं कि तुम्हें उम्मीदवार नहीं बनाने कीवजह से तुम नाराज हो. अपना नजरिया व्यापक रखो और पार्टी व जनता की सेवा करते रहो. याद रखो कि सबसे बड़ा राष्ट्र, उसके बाद पार्टी, फिर परिवार और सबके आखिर में तुम. परिवार से हमारा मतलब तुम्हारी फैमिली नहीं बल्कि संघ परिवार! कॉर्पोरेटर बनने की बजाय संघ के किसी संगठन के लिए काम करो. अपने यहां अ.भा. विद्यार्थी परिषद, विश्व हिंदू परिषद, बजरंग दल, उद्योगने भारती हैं. कहो तो हम तुम्हें प्रचारक बनाकर किसी दुर्गम क्षेत्र में भेज सकते हैं.

कार्यकर्ता : आप जले पर नमक छिड़कने जैसी बात कर रहे हैं. बाहर से आए दलबदलू लोगों को टिकट दे दिया और मेरी इतने वर्षों की सेवा को भुला दिया. यह अन्याय बर्दाश्त नहीं होगा. मैं बागी उम्मीदवार बनकर वोट काटूंगा!

नेता : तुम संघ की शाखा में सिखाए गए आदर्शों को मत भूलो. वहां तुम्हें बताया था कि इदं न मम अर्थात मानकर चलो कि यह मेरा नहीं है. अपने स्वार्थ को परमार्थ में बदलो. क्या अपने नेता दीनदयाल उपाध्याय, नानाजी देशमुख और गोविंदाचार्य ने कभी चुनाव लड़ा था? उनका आदर्श सामने रखकर चलो. अनुशासन में रहो. दु:शासन मत बनो.

कार्यकर्ता : इतने वर्षों तक जनसंपर्क किया. पार्टी मजबूत बनाने का काम किया. बैनर-पोस्टर लगाए. सभा-सम्मेलन का इंतजाम किया, मंच की साज-सज्जा की फिर भी टिकट नहीं दिया.

नेता : देखो, घरों और महलों को बनाने वाले वहां नहीं रहते. सेवा करते रहो, मेवा खाने की आशा मत करो. हम तुम्हें अपने प्रभाव वाले को ऑपरेटिव बैंक या किसी स्कूल में नौकरी दिला देंगे. पार्टी ने जो दिया है, उसी में खुश रहो. व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा रखना हमारे संगठन में मना है. आसमान में उड़ोगे तो जमीन पर गिरोगे. बगैर पार्टी के सपोर्ट तुम जीत नहीं सकते. पार्टी के अधिकृत उम्मीदवार का पूरी तरह साथ दो. यह मानकर चलो कि मन का हो तो अच्छा और मन का न हो तो और भी अच्छा!

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

सबकी अपनी-अपनी आजादी मामा कुंवारा, भांजा करेगा शादी

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, मामा तो शादी कर नहीं रहा लेकिन भांजा घोड़ी चढ़ने जा रहा है. हमारा आशय 50 वर्ष की उम्र पार कर चुके राहुल गांधी और उनके भांजे रेहान वाड्रा से है.'

हमने कहा, 'यह उनका व्यक्तिगत मामला है. आपकी चिंता का विषय नहीं है. राजनीति में कुछ नेता कुंवारे रह जाते हैं तो कुछ पत्नी को अकेली छोड़कर पूरे राष्ट्र की फिक्र में लग जाते हैं. अपना-अपना दृष्टिकोण है. शादी तो सलमान खान ने भी नहीं की. जब दूध का पैकेट आसानी से मिल जाए तो कोई भैंस क्यों पालेगा! राहुल गांधी लोकसभा में विपक्ष के नेता हैं. कांग्रेस पार्टी के केंद्र बिंदु हैं. उनकी मां चाहती है कि वह कभी न कभी देश के प्रधानमंत्री बन जाएं. जब इतनी सारी जिम्मेदारी हो तो इंसान शादी कैसे और क्यों करेगा? बड़े नेताओं को फुर्सत नहीं रहती कि पत्नी और बाल-बच्चों पर ध्यान दें. इसलिए उनकी पॉलिसी रहती है- जोरू ना जाता, अल्ला मियां से नाता!'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, रिश्ते आसमान से बनकर आते हैं, जमीन पर उन्हें सेलिब्रेट किया जाता है. इंसान सोचता रह जाता है- मेरे नसीब में तू है कि नहीं, तेरे नसीब में मैं हूं कि नहीं! कुछ की हालत ऐसी होती है- राम मिलाई जोड़ी, एक अंधा एक कोढ़ी!'

हमने कहा, 'शादी सही उम्र में और जाने-पहचाने घर में हो जाए तो बहुत अच्छा. प्रियंका गांधी की वर्षों पुरानी सहेली है नंदिता बेग. नंदिता इंटीरियर डिजाइनर हैं. उनकी बेटी अवीवा और प्रियंका का बेटा रेहान बचपन से एक-दूसरे को जानते हैं. बचपन की बड़ी महत्ता है. पुराने फिल्मी गीतों के मुखड़े हैं- बचपन के दिन भुला ना देना, आज हंसें कला रूला ना देना! मेरे बचपन के साथी मुझे भूल ना जाना, देखो-देखो हंसे ना जमाना! अवीवा और रेहान 7 साल से मोहब्बत कर रहे हैं जो अब शादी में बदलने जा रही है. यह पता नहीं कि इसमें निकाह होगा, चर्च में मैरिज होगी या 7 फेरे होंगे. कोर्ट मैरिज भी तो हो सकती है. ऐसा मानकर चलिए कि सज के आएंगे दूल्हे राजा और मामा बजाएगा बाजा!'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12130

-डॉ. सागर खादीवाला

1	2		3	■	4	5	
6		■	7				■
8		9	■	■	10		11
■	12			13	■	14	
15			■		■	■	■
	■	■	16			17	18
19	20				■	21	
22		■		■	23		

ऊपर से नीचे
1. उन्नति, आगे की ओर बढ़ना 2. जो सरलतापूर्वक जल उठे या भड़क उठे 3. नवीन 4. पति का छोटा भाई 5. विवाह के समय पहनाई जाने वाली माला 9. चरखे तकली आदि पर या रुई से धागा निकालना 11. बर्बादी, ध्वंस 13. नरमी-सर्दी की वह स्थिति जो कुछ विशेष प्रकार से नापी जाती है 15. जैनों के तेईसवें तीर्थंकर 16. विस्तृत, लंबा-चौड़ा 17. अस्तबल 18. योद्धा, सिपाही, झगड़ालू 20. कीमत, दाम, मूल्य

बाएं से दाएं
1. जलने की क्रिया, जलना (सं)खानाबदोश (सं.) 8. तृण, सूखी 4. सुर (सं.) 6. गला, कंठ 7. घास का टुकड़ा 10. अनुरक्त या लीन करना 12. ठंडक 14. शव 15. भरण-पोषण करना, झूला 16. हवाई अड्डा 19. अस्तित्व, वजूद (उर्दू) 21. जहाजों का समूह, नदी पार करने के लिए बड़े लठ्ठों आदि का बनाया हुआ ढांचा 22. जल से रहित भूमि, स्थान 23. सलाई, सलाख (सं.)

Solution 12129

बु	ल	बु	ला	■	फ	फूं	दी
द्ध	■	त	ल	छ	ट	■	या
पू	त	■	क	ला	का	र	■
र्णि	■	उ	■	बा	र	व	धू
मा	ल	दा	र	■	■	■	लि
■	■	र	■	मां	ग	■	वं
पा	त	■	आ	द	म	क	द
स	प्त	प	दी	■	न	म	न

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में व्यर्थ की यात्राओं में धन व्यय होगा, मानसिक उलझन रहेगी, शत्रु पक्ष प्रबल रहेगा, वर्ष के मध्य में व्यक्तिगत संबंधों में सुधार होगा, सामाजिक कार्यों में ख्याति मिलेगी, वर्ष केअन्त में व्यर्थ की भागदौड़ से मन तनावग्रस्त रहेगा, दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों का शत्रु पक्ष प्रबल रहेगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों का यात्राओं में धन व्यय होगा, कर्क राशि के व्यक्तियों को मानसिक उलझन रहेगी, सिंह राशि के व्यक्तियों का व्यक्तित्व सुखमय निखरेगा, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को दाम्पत्य जीवन मधुर रहेगा, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों का स्वाभाव मिलनसार और सामंजस्यपूर्ण रहेगा, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को दाम्पत्य जीवन साधारण और आनन्दमय रहेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सुंदर, लगनशील, स्वस्थ्य एवं कोमल हृदय का होगा, मधुरभाषी होगा, इनके मित्रों की संख्या सीमित होगी, यात्रा एवं मनोरंजन में विशेष रूचि रहेगी. ये अपने कार्यों में किसी का हस्तक्षेप पसंद नहीं करेगा. माता पिता को जीवन में सुखी रखेगा.

मेष- जोड़तोड़ करके काम कराने के चक्कर में नुकसान होगा, न्यायालयीन कार्यों में सफलता मिलेगी, आशा से अधिक परिश्रम करने पर लाभ होगा.

वृषभ- युवाओं को काम की तलाश में भटकना पड़ेगा, अपने काम को लेकर ज्यादा गंभरी होंगे, सरकारी विभाग में रूके कार्यों के बनने का योग है.

मिथुन- बढ़ते खर्च को पूरा करने में कठिनाई आयेगी, कर्ज लेने की स्थिति बन सकती है, कामकाज के प्रति अरूचि एवं उदासीनता रहेगी, सोचे हुए कार्यों में बाधा आयेगी.

कर्क- बिना सोचे समझे नए काम में हाथ न डालें, लोगों के विरोध का सामना करना पड़ सकता है, भाग्यवर्धक शुभ समाचार प्राप्त होगा, धार्मिक काय्र के प्रति रूचि रहेगी.

सिंह- अपने संपर्कों से रूके काम निकालने में सफल होंगें यात्रा का योग है. राजकीय प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, कोर्ट कचहरी के मामलों में सफलता मिलेगी.

कन्या- जिद्दी रवैया तरक्की की राह में बाधक होगा, समाज में आपके कार्य की पहचान बनेगी, नए संबंधों में मैत्री संबंध महत्वपूर्ण रहेंगें.

तुला- आप अपनी कमियों को दूर करने का प्रयास करेंगे, खर्च की अधिकता रहेगी, लाभ के नये मार्ग खुलेंगे, मिलन होगा, सुख संतोष बना रहेगा.

वृश्चिक- अधिकारी आपकी कार्यशैली से प्रसन्न होंगे, नियमित दिनचर्या रहेगी, इष्ट मित्रों का सहयोग रहेगा, मांगलिक कार्यों में खर्च की अधिकता रहेगी.

धनु- उत्तराधिकार संबंधी समस्या हल होने से राहत मिलेगी, घरेलू आवश्यकताएं की पूरी करने दौड़धूप करना पड़ेगा, पारिवारिक वातावरण सुखद रहेगा.

मकर- दूसरों के दबाव में लिए फैसले मौका मिलते ही बदल देंगे, मित्र वर्ग उत्साहवर्धक सहयोग करेगा, जायजाद प्रापर्टी आदि कार्यों में सफलता प्राप्त होगी. संयम रखें.

कुम्भ- व्यापारिक समझौते भाग्योदय में सहायक रहेंगे, मन की बात करीबी से कहने पर तनाव कम होगा, किये गये प्रयासों में लाभ प्राप्त होगा. नए उपक्रमों का विकास होगा.

मीन- वैवाहिक चर्चाओं में सफलता के आसार हैं, आपके बढ़ते प्रभाव से लोग ईर्ष्या करेंगे, परीक्षा प्रतियोगिता में परिश्रम अधिक करना होगा, उत्तम परिणाम प्राप्त होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

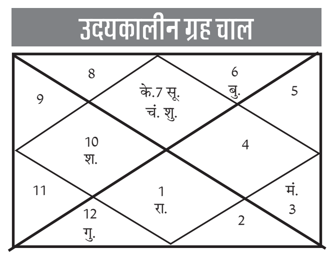

पंचांग

रा.मि. 13 संवत् 2082 पौष शुक्ल पूर्णिमा शनिवासरे शाम 4/3, आर्द्रा नक्षत्रे शाम 6/28, ब्रह्म योगे दिन 10/3, वव करणे सू.उ. 6/46, सू.अ. 5/14, चन्द्रचार मिथुन, पर्व-स्नानदान पूर्णिमा, शु.रा. 3, 5,6,9,10,1 अ.रा. 4,7,8,11,12,2 शुभांक- 5,7,1.

व्यापार भविष्य

पौष शुक्ल पूर्णिमा को आर्द्रा नक्षत्र के प्रभाव से जीरा, धनियां में घटबढ के बाद नरमीं का रूख रहेगा, गेहूं, जौ, चना, जूट, पाट, बारदाना देशी घी, सरसों में मंदी की चाल चलेगी, वायदा विचार आज 1 बजकर 30 मिनिट के रूख पर व्यापार करना लाभप्रद रहेगा. भाग्यांक 5667 है.

SUDOKU 7262

5	9			3			8	7
8	7		1		5			
		2			9			4
	6				2		3	5
3	8		4	1	7		2	9
2	4		6				1	
7			3			8		
			5		8		7	3
9	3			2			6	1

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7261

7	4	8	3	9	2	1	5	6
2	6	9	5	7	1	8	4	3
3	1	5	4	8	6	7	2	9
5	7	4	8	6	9	3	1	2
8	9	1	2	3	4	6	7	5
6	3	2	1	5	7	4	9	8
4	8	7	6	2	5	9	3	1
9	2	6	7	1	3	5	8	4
1	5	3	9	4	8	2	6	7